REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

" भारत में गरीबी की समस्या एवं निदान "

डॉ.राजू रैदास[1], डॉ.विमला मरावी[2]
[1]अतिथि विद्वान वाणिज्य शास. आर. व्ही. पी. एस(स्मृति) महा. वि. उमरिया
[2]सहायक प्राध्यापक (इतिहास) , शास.आर.व्ही.पी.एस(स्मृति) महा.वि.उमरिया.

प्रस्तावना –

निर्धनता जीवन की खराब गुणवत्ता, अशिक्षा, कुपोषण, मूलभूत आवयश्यकताओं की कमी, निम्न मानव संसाधन विकास आदि को प्रदर्शित करता है। भारत में खासतौर से विकसित देशों के लिये ये एक बड़ी चुनौती है। ये एक ऐसा तथ्य है जिसमें समाज में एक वर्ग के लोग अपने जीवन की मूलभूत जरुरतों को भी पूरा नहीं कर सकते हैं। पिछले पाँच वर्षों में गरीबी के स्तर में कुछ कमी दिखाई दी है (1993-94 में 35.97% से 1999-2000 में 26.1%)। ये राज्य स्तर पर भी घटा है जैसे उड़ीसा में 47.15% से 48.56%, मध्य प्रदेश में 37.43% से 43.52%, उत्तर प्रदेश में 31.15% से 40.85% और पश्चिम बंगाल में 27.02% से 35.66% तक। भारत में गरीबी के स्तर में कुछ गिरावट होने के बावजूद भी ये बहुत खुशी की बात नहीं है क्योंकि भारतीय बीपीएल अभी-भी बहुत बड़ा है (26 करोड़)।

भारत में गरीबी कुछ प्रभावकारी कार्यक्रमों के प्रयोगों के द्वारा मिटायी जा सकती है, हालांकि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये केवल सरकार के द्वारा ही नहीं बल्कि सभी के समन्वित प्रयास की जरुरत है। खासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा, जनसंख्या नियंत्रण, परिवार कल्याण, रोज़गार सृजन आदि जैसे मुख्य संघटकों के द्वारा गरीब सामाजिक क्षेत्रों को विकसित करने के लिये कुछ असरकारी रणनीतियों का लक्ष्य भारतीय सरकार को बनाना चाहिये।

गरीबी के ये कुछ निम्न प्रभाव हैं जैसे:

- **निरक्षरता:** पैसों की कमी के चलते उचित शिक्षा प्राप्त करने के लिये गरीबी लोगों को अक्षम बना देती है।
- **पोषण और संतुलित आहार:** गरीबी के कारण संतुलित आहार और पर्याप्त पोषण की अपर्याप्त उपलब्धता जो ढ़ेर सारी खततरनाक और संक्रामक बीमारियाँ लेकर आती है।
- **बाल श्रम:** ये बड़े स्तर पर अशिक्षा को जन्म देता है क्योंकि देश का भविष्य बहुत कम उम्र में ही बहुत ही कम कीमत पर बाल श्रम में शामिल हो जाता है।
- **बेरोज़गारी:** बेरोज़गारी की वजह से गरीबी होती है क्योंकि ये पैसों की कमी उत्पन्न करता है जो लोगों के आम जीवन को प्रभावित करता है। ये लोगों को अपनी इच्छा के विपरीत जीवन जीने को मजबूर करता है।

- **सामाजिक चिंता:** अमीर और गरीब के बीच आय के भयंकर अंतर के कारण ये सामाजिक चिंता उत्पन्न करता है।
- **घर की समस्या:** फुटपाथ, सड़क के किनारे, दूसरी खुली जगहें, एक कमरे में एक-साथ कई लोगों का रहना आदि जीने के लिये ये बुरी परिस्थिति उत्पन्न करता है।
- **बीमारियां:** विभिन्न संक्रामक बीमारियों को ये बढ़ाता है क्योंकि बिना पैसे के लोग उचित स्वच्छता और सफाई को बनाए नहीं रख सकते हैं। किसी भी बीमारी के उचित इलाज के लिये डॉक्टर के खर्च को भी वहन नहीं कर सकते हैं।
- **स्त्री संपन्नता में निर्धनता:** लौंगिक असमानता के कारण महिलाओं के जीवन को बड़े स्तर पर प्रभावित करती है और वो उचित आहार, पोषण और दवा तथा उपचार सुविधा से वंचित रहती है।

गरीबी के कारण : -

भारत में गरीबी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या, कमजोर कृषि, भ्रष्टाचार, पुरानी प्रथाएं, अमीर और गरीब के बीच में बड़ी खाई, बेरोज़गारी, अशिक्षा, संक्रामक रोग आदि है। भारत में जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि पर निर्भर करता है जो कि गरीब है और गरीबी का कारण है। आमतौर पर खराब कृषि और बेरोज़गारी की वजह से लोगों को भोजन की कमी से जूझना पड़ता है। भारत में बढ़ती जनसंख्या भी गरीबी का कारण है। अधिक जनसंख्या मतलब अधिक भोजन, पैसा और घर की जरुरत। मूल सुविधाओं की कमी में, गरीबी ने तेजी से अपने पाँव पसारे हैं। अत्यधिक अमीर और भयंकर गरीब ने अमीर और गरीब के बीच की खाई को बहुत चौड़ा कर दिया है।

यह बात किसी से छुपी हुई नहीं है की भारत में गरीबी बहुत अधिक है। मगर आज हम आपके सामने भारत में गरीबी के मुख्य कारण प्रस्तुत करने जा रहे है जिन से यह खत्म नहीं हो रही है। इसमें कुछ योगदान जनता का भी है जो की इस लेख में विस्तार रूप में बताया गया है।

1. शिक्षा की कमी – भारत में अभी भी एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो अशिक्षित है। यह एक मुख्य वजह है बेरोज़गारी की जिससे गरीबी को बढ़ावा मिल रहा है। अशिक्षित व्यक्ति काम की कमी के कारण कुछ कार्य नहीं कर पाते जिससे वो अच्छे से जीवन यापन कर सकें।

2. विकास योजनाओं में कमी एवं उदासीनता – कई बार यह पाया गया है की सरकार के द्वारा उत्थान के लिए उतने प्रयोजन नहीं किये जाते जितने की होने चाहिए।

3. करों में भारी मात्रा में चोरी – भारत में भ्रष्टाचार की क्या स्थिति है यह सब जानते है। उसमे से ही एक समस्या है करो में की गयी चोरी जिससे सरकार को उतनी आय नहीं होती जितनी होनी चाहिए और आम जनता कई लाभों से वंचित रह जाती है।

4. बाल मज़दूरी और दास प्रथा – भारत में दास प्रथा और बाल मज़दूरी एक बहुत ही भीषण समस्या है जिससे कई लोग प्रभावित है। गरीबी बढ़ाने में इनका भी बहुत अधिक योगदान है।

5. भारत कृषी प्रधान देश है फिर भी कृषी को भारत में बहुत पिछड़ा बना दिया गया है। वो इसलिए भी की अब कोई यह कार्य करना पसंद नहीं करता और यह पिछड़ती जा रही है।

6. आय की समानता ना होना भी गरीबी को बढ़ावा देने का एक मुख्य कारक है। आय की समानता न होना आंशिक रूप से भ्रष्टाचार से भी जुडी हुई है।

गरीबी का प्रभाव :-

गरीबी लोगों को कई तरह से प्रभावित करती है। गरीबी के कई प्रभाव हैं जैसे अशिक्षा, असुरक्षित आहार और पोषण, बाल श्रम, खराब घर, गुणवत्ताहीन जीवनशैली, बेरोजगारी, खराब साफ-सफाई, पुरुषों की तुलना में महिलाओं में गरीबी की अधिकता, आदि। पैसों की कमी की वजह से अमीर और गरीब के बीच खाई बढ़ती ही जा रही है। ये अंतर ही किसी देश को अविकसित की श्रेणी की ओर ले जाता है। गरीबी की वजह से ही कोई छोटा बच्चा अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिये स्कूल जाने के बजाय कम मजदूरी पर काम करने को मजबूर है।

गरीबी को जड़ से हटाने का समाधान :-

इस ग्रह पर मानवता की अच्छाई के लिये त्वरित आधार पर गरीबी की समस्या को सुलझाने के लिये ये बहुत जरुरी है। कुछ समाधान जो गरीबी की समस्या को सुलझाने में बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं वो इस प्रकार है:

- फायदेमंद बनाने के साथ ही अच्छी खेती के लिये किसानों को उचित और जरुरी सुविधा मिलनी चाहिये।
- बालिग लोग जो अशिक्षित हैं को जीवन की बेहतरी के लिये जरुरी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।
- हमेशा बढ़ रही जनसंख्या और इसी तरह से गरीबी को जाँचने के लिये लोगों के द्वारा परिवार नियोजन का अनुसरण करना चाहिये।
- गरीबी को मिटाने के लिये पूरी दुनिया से भ्रष्टाचार का खात्मा करना चाहिये।
- हरेक बच्चों को स्कूल जाना चाहिये और पूरी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।
- रोजगार के रास्ते होने चाहिये जहाँ सभी वर्गों के लोग एक साथ कार्य कर सकें।

निष्कर्ष : -

गरीबी केवल एक इंसान की समस्या नहीं है बल्कि ये राष्ट्रीय समस्या है। इसे त्वरित आधार पर कुछ प्रभावी तरीकों को लागू करके सुलझाना चाहिये। सरकार द्वारा निर्धनता को हटाने के लिये विभिन्न प्रकार के कदम उठाये गये हालांकि कोई भी स्पष्ट परिणाम दिखाई नहीं देता। लोग, अर्थव्यवस्था, समाज और देश के चिरस्थायी और समावेशी वृद्धि के लिये गरीबी का उन्मूलन बहुत जरुरी है। गरीबी को जड़ से उखाड़ने के लिये हरेक व्यक्ति का एक-जुट होना बहुत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. नव भारत पत्रिका वर्ष 2017
2. पत्रिका समाचार पत्र, जबलपुर संस्करण फरवरी 2018
3- www.google.com/wikipedia.com

डॉ.राजू रैदास
अतिथि विद्वान वाणिज्य शास. आर. व्ही. पी. एस (स्मृति) महा.वि.उमरिया.

डॉ.चन्द्रकला अरमोती
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) रानी दुर्गावती शास. महा. वि. मण्डला.

LBP PUBLICATION